भूमिका ।

इस समय में विचारशील जनों के मन में यह बात आने लगी है कि देश में एक भाषा और एक लिपि होने की बड़ी ज़रूरत है, और हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही इस योग्य

भूमिका।

— —:०:——

इस समय में विचारशील जनों के मन में यह बात आने लगी है कि देश में एक भाषा और एक लिपि होने की बड़ी ज़रूरत है, और हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि ही इस योग्य है। हमारे मुसलमान भाई इसकी प्रतिकूलता करते हैं। वे विदेशी फ़ारसी लिपि, और विदेशी भाषा के सहारे से स्वतन्त्र बनी हुई उर्दू, को ही इस योग्य बतलाते हैं। परन्तु वे इसकी प्रतिकूलता करते किस कारण से भला? सामाजिक, धार्मिक, यहाँ तक कि राजनैतिक विषयों में भी उनका हिन्दुओं से ३६ का सम्बन्ध है। भाषा और लिपि के विषय में उनकी दलीलें ऐसी ऊटपटाँग, ऐसी निर्बल, ऐसी बनावटी और ऐसी पक्षपातियों की हैं कि कोई भी स्वतन्त्र और पक्षपातहीन मनुष्य उनसे सहमत नहीं हो सकता। बंगाली, गुजराती, महाराष्ट्र और मदरासी सब हिन्द देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा को देशव्यापी

लोगों का सब से बड़ा कर्तव्य है। क्योंकि जब हम उनसे कहते हैं कि आप अपनी भाषा की प्रधानता न रख कर हमारी भाषा को दीजिए—उसी को देश-व्यापक भाषा बनाइए—तब उनसे अपनी भाषा का कुछ हाल भी तो बताना चाहिए। अपनी भाषा की उत्पत्ति, विकास और वर्तमान स्थिति का थोड़ा सा भी हाल न बतला कर, अन्य प्रान्तवालों से उसे क़बूल कर लेने की प्रार्थना करना भी तो अच्छा नहीं लगता।

इन्हीं बातों का विचार करके हमने यह छोटी सी पुस्तक लिखी है। इसमें वर्तमान हिन्दी की बातों की अपेक्षा उसकी पूर्ववर्तिनी भाषाओं ही की बातें अधिक हैं। हिन्दी की उत्पत्ति के वर्णन में इस बात की ज़रूरत थी। बंगाले में भागीरथी के किनारे रहनेवालों से यह कह देना काफ़ी नहीं कि गङ्गा, हरद्वार से आई हैं या वहीं उत्पन्न हुई हैं। नहीं, ठेठ गङ्गोत्तरी तक जाना होगा, और वहाँ से गङ्गा की उत्पत्ति का वर्णन करके क्रम क्रम से हरद्वार, कानपुर, प्रयाग, काशी, पटना होते हुए बंगाले के प्रान्त में पहुँचना होगा। इसी से हिन्दी की उत्पत्ति लिखने में आदिम आर्यों की पुरानी से पुरानी भाषाओं का उल्लेख करके उनके क्रमविकास

हैं। इससे मालूम होता है कि भाषाओं की हिन्दी के विषय में जो बातें मालूम हुई हैं वे इस प्रकरण में आ गई हैं। इस निबन्ध के [illegible] में डाकृर ग्रियर्सन की इस पुस्तक से सहायता मिली है। भाषाओं की जाँच से स[illegible] रखने वाली सब किताबें अब निकल चुकी डाकृर साहब की भूमिका अलग [illegible] निकलेगी। सम्भव है उसमें कोई नई बातें देखने को मिलें। पर तब तक ठहरने की हम विशे[illegible] ज़रूरत नहीं समझते। क्योंकि इस विष[illegible] सिद्धान्त बड़े ही अनस्थिर हैं—बड़े ही परिवर्तन शील हैं। जो सिद्धान्त आज दृढ़ समझा जाता है कल किसी नई बात के मालूम होने पर, भ्रान्त सिद्ध हो जाता है। इससे यदि वर्ष दो वर्ष ठहरने से कोई नई बातें मालूम भी हो जायँ, तो कौन क[illegible] सकता है, आगे चल कर किसी दिन वे भी न भ्रान्त सिद्ध हो जायँगी। अतएव आगे की बातें आगे होती आयँगी। इस समय जो कुछ सामने है उसीके आधार पर हम इस विषय को थोड़े में लिखते हैं।

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

जहाँ सुभीता होता था वहाँ आकर रहते थे। अपनी भेड़ें, बकरियाँ और गायें लिये ये घूमा क[illegible] थे। धीरे धीरे कुछ लोग खेती भी करने लगे। [illegible] जब पास पास रहने से गुजारा न हुआ तब उ[illegible] से कुछ पश्चिम की ओर चल दिये, कुछ पू[illegible] ओर। जो लोग पश्चिम की ओर गये उनमें [illegible] लैटिन, केल्टिक और ट्यूटानिक भाषा बोलने[illegible] जातियों की उत्पत्ति हुई। जो पूर्व को गये इन[illegible] भिन्न भिन्न भाषायें बोलनेवाली जातियाँ उत्पन्न [illegible] उनमें से एक का नाम आर्य्य हुआ।

आर्य्य लोगों ने अपना आदिम स्थान कब [illegible] पता नहीं चलता। लेकिन छोड़ा जरूर, यह निःसन्दे[illegible] है। बहुत करके उन्होंने कास्पियन सागर के [illegible] से प्रयाण किया और पूर्व की ओर बढ़ने [illegible] जब ये आक्सस और जक्जारटिस नदियों के कि[illegible] आये, तब वहाँ ठहर गये। यह देश उनको ब[illegible] पसन्द आया। सम्भव है वे खीवा के उस प्रान्त [illegible] ठहरे हों, जो और सों की अपेक्षा अधिक सरसब्ज [illegible] यदिवा में खीवा को ही आर्य्यों का सब से पुर[illegible] निवास-स्थान मानना चाहिए। यहाँ कुछ [illegible] तक रह कर आर्य्य लोग पूर्वोक्त नदियों के कि[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] :—

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

से यूरप और एफ्रीका आदि को, तथा कितनीही अनार्य्य,भाषायें बोलते हैं। ईरानी और आर्य्य भाषा से यह मतलब नहीं कि इस नाम की कोई पृथक भाषा हैं। नहीं, इनसे सिर्फ़ इतनाही मतलब है, कि जो भाषायें २० करोड़ आदमी इस समय हिन्दुस्तान में बोलते हैं वे पुरानी आर्य्य और ईरानी भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं। ये दो शाखायें हैं। इन्हीं से और कितनी ही भाषाओं की उत्पत्ति हुई है।

ईरानी शाखा।

खोकन्द और बदख़्शां तक सब आर्य्य साथ साथ रहे। यहां से कुछ आर्य्य हिन्दुस्तान की तरफ़ आये और कुछ फ़ारिस की तरफ़ गये। इन फ़ारिस की तरफ़ जाने वालों में से कुछ लोग काश्मीर के उत्तर, पामीर, पहुंचे। ये लोग अब तक ईरानी भाषायें बोलते हैं। जो लोग फारिस की तरफ़ गये थे वे धीरे धीरे मर्व, फ़ारिस, अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान में फैल गये। यहां इनकी भाषा के दो भेद हो गये। परजिक और मीडिक।

परजिक भाषा।

परजिक भाषा का दूसरा नाम पुरानी फारसी है। ईसा के पाँच छः सौ वर्ष पहले ही से इसका

जाती हैं यहाँ कभी कभी फ़ारसी बोलते हैं। या अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारिस से आकर जो लोग यहाँ बस गये हैं, अथवा जो लोग इन देशों से व्यापार के लिए यहाँ आते हैं—विशेष करके घोड़ों के व्यापारी—वे फ़ारसी बोलते हैं। फ़ारसी बोली और लोगों के मुँह से अब बहुत कम सुनने में आती है। थोड़े फ़ारसी जाननेवाले इसे बोल लेते हैं, पर फ़ारसी उनकी बोली नहीं। इससे वे विशुद्ध फ़ारसी नहीं बोल सकते।

मुसलमानी राज्य में जो लोग फ़ारिस और अफ़ग़ानिस्तान आदि देशों से आकर इस देश में बस गये थे और जिनकी सन्तति अब तक यहाँ वर्तमान है—वर्तमान है क्यों, बढ़ती जाती है—उनके पूर्वज ईरानियों के वंशज थे। अर्थात् वे लोग जो भाषा बोलते थे वह पुरानी ईरानी भाषा से उत्पन्न हुई थी। आर्यों ने अपनी जिस अवस्था का साथ अवस्था के पास पास कहीं छोड़ा था, उसी अवस्था के बराबर, सैकड़ों वर्ष बाद, हिन्दुस्तान में आकर फिर आर्यों के वंशजों के साथ रहने लगे। इस तरह का मेलजोल तब आर्यों में बहुत पहले से चुका था। डाक्टर विण्टरनित्स लिखते हैं कि सिकन्दर

के समय में, और उसके बाद भी, सूर्योपासक पुराने ईरानियों के वंशज, धर्म्मोपदेश करने के लिए, इस देश में आये थे। इन में बहुत से शक (सीथियन। Scythians) लोग भी थे। इस बात को हुए कोई दो हज़ार वर्ष हुए। ये लोग इस देश में आकर धीरे धीरे यहां के ब्राह्मणों में मिल गये और अब तक शाकद्वीपीय ब्राह्मण कहलाते हैं।

जब मुसलमानों की प्रभुता फारिस में बढ़ी, और वहां के अग्निपूजक ईरानियों पर अत्याचार होने लगे, तब ज़रथुस्त्र के उपासक कुछ लोग इस देश में भग आये और हिन्दुस्तान के पश्चिम, गुजरात में, रहने लगे। आज कल के पारसी उन्हीं की सन्तति हैं। पर, यद्यपि भारत के शाकद्वीपीय ब्राह्मण और पारसी ईरानियों के वंशज हैं तथापि न तो वे ईरान ही की कोई भाषा बोलते हैं और न उसकी कोई शाखा ही। इनको इस देश में रहते बहुत दिन हो गये हैं। इसलिए इनकी बोली यहीं की बोली हो गई है।

मीडिक भाषा।

मीडिक भाषा-समूह में बहुत सी भाषायें और बोलियां शामिल हैं, ईरान के जितने ही हिस्सों में यह

भाषा बोली जाती थी। ये सब हिस्से, सूबे, या प्रान्त पास ही पास न थे। कोई कोई एक दूसरे से बहुत दूर थे। मीडिया पुराने ज़माने में फ़ारिस का वह हिस्सा कहलाता था जिसे इस समय पश्चिमी फ़ारिस कहते हैं। मीडिया वालों की भाषा का नाम मीडिक है। पारसी लोगों का प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ अवस्ता इसी पुरानी मीडिक भाषा में है। बहुत लोग अब तक यह समझते थे कि अवस्ता ग्रन्थ ज़ेन्द भाषा में है। उसका नाम ज़ेन्द-अवस्ता सुन कर यही भ्रम होता है। परन्तु यह भूल है। इस भूल के कारण एक योरोपीय पण्डित महोदय हैं। उन्होंने भ्रम से अवस्ता की रचना ज़ेन्द भाषा में बतला दी। और लोगों ने बिना निश्चय किये ही इस मत को मान लिया। पर अब यह बात अच्छी तरह साबित करदी गई है कि अवस्ता की भाषा ज़ेन्द नहीं। भाषा उसकी पुरानी मीडिक है। अवस्ता का अनुवाद और उस पर भाष्य ईरान की पुरानी भाषा पहलवी में है। इस अनुवाद और भाष्य का नाम ज़ेन्द है, भाषा का नहीं। वेदों की तरह अवस्ता के भी सब भाग एक ही साथ निर्माण नहीं हुए। कोई पहले हुआ है, कोई पीछे। उसका सब

गई उसका और उसकी शाखाओं का
हो चुका। अब उन आर्यों का हाल सुनिए
खोक़न्द और बदख्शां का पहाड़ी
दक्षिण की तरफ़ हिन्दुस्तान में आये।
आर्यों की क्यों दो शाखायें होगईं ?
एक तरफ़ गई, दूसरी दूसरी तरफ़
उत्तर नहीं दिया जा सकता।
भेद के कारण यह बात हुई हो। या
आर्यों की राज्यप्रणाली हमारे पुराने आर्यों
पसन्द न आई हो। क्योंकि ईरानी लोग
पुराने ज़माने से ही अपने में से एक आदमी
राजा बनाकर उसके अधीन रहने लगे थे
हिन्दुस्तान की तरफ़ आने वाले आर्यों को यह बात
पसन्द न थी। अथवा आर्यों के विभक्त होने का
इन दो में से एक भी कारण न हो। सम्भव है वे
यों ही दक्षिण की तरफ़ आने को बढ़ते गये हों।
क्योंकि जो जातियां अपने पशु-समूह को साथ
लिये घूमा करती हैं वे स्थिर भी रहती नहीं। हमेशा
ही स्थान-परिवर्तन किया करती हैं। अतएव सम्भव
है आर्य्य लोग अपनी तत्कालीन स्थिति के अनुसार
हिन्दुस्तान की तरफ़ योंही चले आये हों। चाहे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

होता है कि देवोपासक आर्य्य सुरापान और असुरोपासक सुरापान के विरोधी थे में वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड का सर्ग देखिए। जान पड़ता है सुरापान न से ईरान की तरफ़ जाने वाले आर्य्यों से पूर्वज आर्य्य घृणा करने लगे थे। उन से का भी शायद यही मुख्य कारण हो। पारसियों अवस्ता में असुर उपास्य माने गये और सुर देवता घृणास्पद।

ऋग्वेद के बहुत पुराने मंत्रों में असुर सुर (देव) दोनों पूज्य माने गये हैं। कहीं कहीं असुरों से घृणा की गई है। वेदों उत्तर काल के साहित्य में तो असुर सर्वत्र ही और निंद्य माने गये हैं।

"असु" शब्द का अर्थ है "प्राण"। जो सप्राण या बलवान हो वही असुर है। बाबू महेशचन्द्र घोष "प्रवासी" में लिखते हैं कि 'असुर' शब्द ऋग्वेद में कोई १०० दफ़े आया है। उस में से केवल ११ स्थल ऐसे हैं जहाँ इस शब्द का अर्थ देवशत्रु है। अन्यत्र सब कहीं सविता, पूषा, मित्र, वरुण, अग्नि, सोम और कहीं कहीं श्रेष्ठ मनुष्यों के लिए भी "असुर"

ऐसा अनुमान किया जाता है। उदाहरण के लिए ऋग्वेद के पहले मण्डल का १८ वां, दूसरे का १७ वां, सातवें का दूसरा और दसवें का ११४ वाँ सूक्त देखिए। इससे ज्ञात होता है कि बहुत पुराने समय में असुर शब्द का बुरा अर्थ नहीं था। और क्योंकि अवस्ता में असुर (अहुर) की उपासना है, और वह देवोपासकों का शत्रु माना है अतएव उनके [illegible] अनुयायियों [illegible] के [illegible] उन्हीं शब्दों के [illegible] है जिनके [illegible] में [illegible] था और [illegible] वो [illegible] लोग अपने [illegible] समझेंगे।

वैदिक देवताओं और पारसिक शब्दों की तुलना करने से यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि वेद और अवस्ता की भाषा बोलने वालों के पूर्वज किसी समय एक ही भाषा बोलते थे। उदाहरण :—

वैदिक शब्द	अवस्ता के शब्द
मित्र	मिथ
अर्यमन्	ऐर्यमन्
[illegible]	पथ
पशु	पसु
दानव	दानु

गाथा	गाथा
मन्त्र	मन्थ्र
होता	ज़ओता
आहुति	आज़ुइति

संस्कृत और अवस्ता की भाषा में इतना साहश्य है कि दोनों का मिलान करने से इस बात में ज़रा भी सन्देह की जगह नहीं रह जाती कि किसी समय ये दोनों भाषायें एक ही थीं। शब्द, धातु, कृत्, तद्धित, अव्यय इत्यादि सभी विषयों में विलक्षण साहश्य है।

उदाहरण

संस्कृत	अवस्ता की भाषा
नर	नरेम्
रथ	रथम्
देव	दएव
गो	गाओ
कर्ण	करेन
गम्य	गाम्य
शत	सत
पशु	पसु
दात्र	दाप्र

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

ग्रंथ देखा, हिंदुस्तान की सरहद, सरहदाद के करीब रह इलाका की और काफिरिस्तान, चित्राल, गिलगित, और काश्मीर की उत्तरी सरहद्द के पहाड़ों में। बहुत मालूम है कि यहां की भाषा का बहुत अंश प्राचीन स्थान में उच्चारण की भाषा था, उसके बाद वहां भाषा बिगड़, कहीं में किसी किनारे पहाड़ पहुंचा है और कहीं से मिलकर और विस्तार आदि से बदल गया है। पैशाच, प्राकृतों, पश्तो, आदि भाषाएं या देशियाँ और काश्मीर के उत्तर प्रदेशों के बोली जाती है, उनका संस्कृत से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इनमें कुछ साहित्य भी नहीं है। और न इनके लिखने की कोई लिपि ही पाई जाती है। अतएव ठीक तौर से इस से नहीं मालूम होता है कि वे भाषाएं संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुईं। यहां संस्कृत से मतलब उस पुरानी संस्कृत से है जिसे पंजाब में रहनेवाले आर्य बोलते थे।

पशुमावों आदि अनार्य भाषा-भाषा बोलनेवाले लोगों की संख्या इस देश में बहुत ही कम है। १९०१ ईसवी में यह सिर्फ ५८, ९४० थी।

[illegible] बनती रही है
[illegible] गया है
[illegible] पश्चिम से [illegible]
[illegible] को आगे [illegible]
[illegible] जाता था।
[illegible] भाषा बोलते थे [illegible]
[illegible] वेदों का मन्त्र-भाग [illegible]
[illegible] कभी बना है, कुछ [illegible]
[illegible] बड़ा अन्तर है। [illegible]
[illegible] रचना नहीं हुई। कुछ
[illegible] हुई है, कुछ की पश्चात्
[illegible] किनारे। जिन आर्य [illegible]
[illegible] उनका सम्पादन कि[illegible]
[illegible] दिया जिसमें उन्हें हम
[illegible] रचना-काल और रच[illegible]
[illegible] जिस भाग को जहाँ [illegible]
[illegible] रचना-काल के अनु[illegible]
[illegible] सहज में नहीं लगता
[illegible] जा चुका है, सब आर्य एक
[illegible] आये। धीरे धीरे आ[illegible]
[illegible] विद्वानों का मत है

[illegible] नहीं है। यही समस्त पश्चिम प्रदेश आज [illegible] है। [illegible] है [illegible] [illegible], दक्षिण में [illegible], पूर्व में [illegible], [illegible] में [illegible]। इस मध्य देश के एक छोर से दूसरे छोर तक सरस्वती नदी की पवित्र धारा बहती थी। वैदिक समय में इसी के किनारे ब्रह्म-र्षि ऋषियों का वास था।

संस्कृतोत्पन्न आर्य्य-भाषाओं की दो शाखायें।

संस्कृत से उत्पन्न होने वाली जितनी भाषायें इस समय हिन्दुस्तान में बोली जाती हैं उनकी दो शाखायें हैं। [illegible] भागों में विभक्त [illegible] एक शाखा तो ठीक इस प्रान्त में बोली जाती है जिसका पुराना नाम मध्य-देश था। दूसरी शाखा इस मध्य-देश के तीन तरफ बोली जाती है। उसमें निकली हुई भाषाओं का प्रारम्भ काश्मीर से होता है। यहाँ से पश्चिमी पंजाब, सिन्ध और महाराष्ट्र देश में होती हुई वे मध्य भारत, उड़ीसा, बिहार, बंगाल और आसाम तक पहुँची हैं। गुजरात को इसने छोड़ दिया है क्योंकि यहाँ की भाषा मध्य देशीय भाषा से सम्बन्ध रखती है। इसका कारण

[illegible] पुराने ज़माने में गुजरात प्रान्त मथुरा से जीता गया था। मथुरा के नवागत आर्यों ने गुजरात के पूर्वागत आर्यों को अपने अधीन किया था। मथुरा मध्य देश में था। और बहुत नवागत आर्य गुजरात में जाकर रहने लगे। इसी से मध्यदेश की भाषा [illegible] प्रान्त भाषा गई। हिन्दुस्तान भर में [illegible] यही प्रान्त ऐसा है जिसके लिए [illegible] ने अपने [illegible] की भाषा स्वीकार करली है

अन्तःशाखा और बहिःशाखा।

परवर्ती नवागत आर्य जो मध्यदेश [illegible] थे उनकी भाषा का नाम ग्रियर्सन के [illegible] शाखा रखते हैं। और जो पूर्ववर्ती आर्य [illegible] के द्वारा बाहर निकाल दिये गये थे, [illegible] [illegible] में जाकर जो रहने लगे थे, उनकी [illegible] नाम बहिःशाखा रखते हैं।

इन दोनों शाखाओं की भाषाओं [illegible] है। प्रत्येक में कुछ न कुछ [illegible] का उच्चारण [illegible] है उनके अन्तःशाखा वाले

देखते हैं, यही सब कि यह [illegible] 'ल' [illegible] है। पर पंडिताऊ लोग [illegible] नहीं [illegible] के साधारण लोगों के 'बीमार' शब्द का [illegible] 'बेमार' कर दिया है। पूर्व की तरफ [illegible] 'स', 'श' हो गया है। महाराष्ट्र में और [illegible] पर बहुत कुछ बदल हो गया है। [illegible] की अपढ़ जनता [illegible] गई है। [illegible] में भी [illegible] [illegible] हो जाता नहीं है। यही [illegible] विशद् पर 'ग' हो गया है।

[illegible] बोलियों में भी बदल है। [illegible] [illegible] है उसकी मूल [illegible] और उनका लोप हो गया है और [illegible] पर और [illegible] गये हैं। [illegible] के [illegible] जाता है। उदाहरण [illegible] 'ऐ' आदि [illegible] में आती हैं उस [illegible] समझना चाहिए। [illegible]

है, और पंजाबी का रूप प्राप्त करके, लहंदा से मिल जाती है। लहंदा पर आती है जो पंजाब के पश्चिम मुल्तान और भावलपुर आदि में बोली जाती है। गुजरात में भी इस भीतरी शाखा का प्राधान्य है। अतः उसने पृथक्-प्रचलित बाहरी शाखा की भाषा के अधिकार को छीन लिया है।

जिन भाषाओं का जिक्र ऊपर किया गया उन्हें छोड़ कर शेष जितनी संस्कृतोत्पन्न आर्य-भाषायें हैं सब बाहरी शाखा के अन्तर्गत हैं।

संस्कृतोत्पन्न आर्य्य-भाषाओं के भेद।

संस्कृत से (याद रखिए, पुरानी संस्कृत से मतलब है) उत्पन्न हुई जितनी आर्य भाषायें हैं वे नीचे लिखे अनुसार शाखाओं, उपशाखाओं और भाषाओं में विभाजित की जा सकती हैं:—

(१) बाहरी शाखा। इसकी तीन उपशाखायें हैं—उत्तर-पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी।

(२) मध्यवर्ती शाखा।

(३) भीतरी शाखा। इसकी दो उपशाखायें हैं—

अब हम नीचे एक लेखा देते हैं जिससे मालूम हो जायगा कि प्रत्येक उपशाखा [illegible] और भाषाओं में सन् १९०१ ईसवी की मर्दुमशुमारी के अनुसार प्रत्येक उपशाखा और भाषा के बोलने वालों की संख्या कितनी है—

बाहरी शाखा

(क) उत्तर-पश्चिमी उपशाखा		३,३[illegible]
१ काश्मीरी	१,००७,९[illegible]	
२ कोहिस्तानी	[illegible]	
३ लहंडा	३,३३७,९[illegible]	
४ सिंधी	३,००६,[illegible]	
(ख) दक्षिणी उपशाखा		[illegible]
१ मराठी	१८,२३७,८[illegible]	
(ग) पूर्वी उपशाखा		[illegible]
१ [illegible]	[illegible]	
२ [illegible]	[illegible]	
३ [illegible]	[illegible]	
४ [illegible]	१,३[illegible]	

मध्यवर्ती शाखा

(क) [illegible] उपशाखा		[illegible]
[illegible]	[illegible]	

भीतरी शाखा

(ङ) पश्चिमी उपशाखा ७७,२९२,०४९

११ पश्चिमी हिन्दी ४०,७१४,९२५

१२ राजस्थानी १०,९१७,७१२

१३ गुजराती ९,९२८,५०१

१४ पंजाबी १५,७३०,९११

(च) उत्तरी उपशाखा ३,१०४,९८१

१५ पश्चिमी पहाड़ी १,७१०,०२९

१६ मध्यवर्ती पहाड़ी १,२७०,९३१

१७ पूर्वी पहाड़ी १४३,७२१

२१९,७८०,५०९

इससे मालूम हुआ कि भारतवर्ष आर्य भाषायें तीन शाखाओं ?? उपशाखाओं और सत्रह भाषाओं में विभक्त हैं और २१ करोड़ से भी अधिक आदमी उन्हें बोलते हैं। इन सब की संख्या २१९,४६१,०५६ अर्थात् बाईस करोड़ के लगभग है। इसके सिवा एक करोड़ आदमी ये भाषायें बोलते हैं, साढ़े पाँच करोड़ द्राविड़ भाषायें और डेढ़ तीन करोड़ अनार्य विदेशी भाषायें। तामील, तैलगू, कनारी आदि द्राविड़-भाषायें मद्रास प्रान्त

जाजाते नहीं हैं। बहुत सी किताबें [illegible] के [illegible] भागों में विभक्त कर दिये गये हैं और प्रत्येक [illegible] अलग [illegible] दिया गया है। ये किताबें [illegible] के [illegible], [illegible] आदि [illegible] में पाती जाती हैं।

प्राकृत के तीन भेद।

अशोक का समय ईसा के २५० वर्ष पहले है ; पतञ्जलि का १५० वर्ष पहले। अशोक के शिलालेख से और पतञ्जलि के ग्रन्थों से मालूम होता है कि ईसवी सन के कोई तीन सौ वर्ष पहले इस देश में एक ऐसी भाषा प्रचलित हो गई थी जिसमें कि कई बोलियाँ शामिल थीं। यह पुरानी रूप से बिगड़ी भाषा उस रूप अशोक से थोड़ी ही थी जिस रूप में कि पतञ्जलि का व्याकरण है थी। अर्थात् यह पुरानी संस्कृत वैदिक प्राकृत और व्याकरण की भाषा का उपयोग कर नई भाषा हो गई थी। इस भाषा के साथ साथ एक और परिष्कृत भाषा भी प्रचलित हुई। यह परिष्कृत भाषा भी पुरानी संस्कृत की किसी शाखा या बोली से निकली थी। इस परिष्कृत भाषा का नाम हुआ "संस्कृत" अर्थात् "संस्कार की गई"—"परिष्कृत", और उस नई भाषा का नाम हुआ "प्राकृत" अर्थात् "स्वाभाविक" या "स्वाभाविक"।

वैदिक भाषा का कुछ भाग तो पुरानी संस्कृत से है और कुछ परिष्कृत संस्कृत से। इस से प्राचीन

[illegible]

में कोई सन्देह नहीं कि संस्कृत और प्राकृत की सहायता से वर्तमान भाषाओं के बहुत से बातें अनेक बातें मालूम हो सकती है, परन्तु इनसे उनकी जड़ नहीं। जड़ के लिए तो अपभ्रंश भाषायें ही देखनी होंगी।

लिखित साहित्य में सिर्फ एक ही अपभ्रंश भाषा का नमूना मिलता है। वह नागर अपभ्रंश है। इस का प्रचार बहुत कर के पश्चिमी भारत में था। पर प्राकृत व्याकरणों में जो नियम दिये हुए हैं उनसे अन्यान्य अपभ्रंश भाषाओं के मुख्य मुख्य लक्षण मालूम करना कठिन नहीं। यहाँ पर हम अपभ्रंश भाषाओं की सिर्फ नामावली देते हैं और यह बतलाते हैं कि कौन वर्तमान भाषा किस अपभ्रंश से निकली है।

बाहरी शाखा की अपभ्रंश भाषायें।

सिन्धु नदी के अधोभाग के आस पास जो देश है उस में व्राचड़ा नाम की अपभ्रंश भाषा बोली जाती थी। वर्तमान समय की सिन्धी और लहँडा उसी से निकली हैं। लहँडा उस प्रान्त की भाषा है जिस का पुराना नाम केकय देश है। सम्भव है केकय देश

है। जिस प्राकृत भाषा का नाम अर्धमागधी है वह मागधी का प्राकृत है। शुद्ध [illegible] किसी समय [illegible] पर यह बोली [illegible] की भाषा हुई थी।

पाश्चिमात्य-भाषा भाषा प्रदेश के पूर्व से लेकर [illegible] की तरह नव बोली का उपवहा अपभ्रंश प्रचलित थी। वर्तमान अवधी भाषा उसी से निकली है।

जिन प्रान्तों में बोलचाल भाषा मागधी थी [illegible] उत्तर, पश्चिम [illegible] छोटा नागपुर, बिहार और [illegible] प्रान्तों के पूर्वी भाग में मागधी प्राकृत की अपभ्रंश, मागध भाषा, बोली जाती थी। इसका [illegible] बहुत बड़ा था। वर्तमान बिहारी भाषा इसी से उत्पन्न है। इस अपभ्रंश की एक बोली अब तक अपने पुराने नाम से मशहूर है यह भाषा [illegible] मगही कहलाती है। मगही शब्द मागधी का ही अपभ्रंश है। मागध अपभ्रंश की किसी समय यही प्रधान बोली थी। यह अपभ्रंश भाषा पुरानी पूर्वी प्राकृत की वंशधर थी। ओडरी, गौड़ी और ढक्की भी उसी के विकासप्राप्त रूप थे। उसके ये रूप बिगड़ते बिगड़ते या विकास होते होते, हो गये थे। मगही गौड़ी, ढक्की और ओडरी इन चारों भाषाओं की आदि

[illegible]

है, क्योंकि भारत की संस्कृति एवं वर्तमान भाषा

[illegible] ध्यान दीजिए, उस का [illegible]
[illegible] कीजिए, संस्कृत का प्रभाव आप [illegible]
[illegible] हुआ मिलेगा। संस्कृत-शब्दों [illegible]
[illegible] बढ़ता जाता है, पर संस्कृत-[illegible]
[illegible] के अनुसार हिन्दी-व्याकरण [illegible]
[illegible] होते हैं। बहुत ही क[illegible]
[illegible] बिलकुल नहीं होते, तो [illegible]
[illegible] आचार, आहार, विचार, विहा[illegible]
[illegible] आदि सब तत्सम शब्द है [illegible]
[illegible] लिख दिये जाते हैं। बहुत क[illegible]
[illegible] होता भी है तो विशे[illegible]
[illegible] आहारों, विचारों, करामों [illegible]
[illegible] इनमें विभक्तियाँ लगाई जा[illegible]
[illegible] इनका रूपान्तर नहीं [illegible]
[illegible] और वचन के अनुस[illegible]
[illegible] जाता है, पर विभक्ति[illegible]
[illegible] बहुत कम बदल [illegible]
[illegible] शब्दों से क्रिया का का[illegible]
[illegible] शब्दों को क्रिया का [illegible]
[illegible] शब्द और जोड़[illegible]
[illegible] तत्सम है। अब इस [illegible]

[illegible] है कि बोल चाल

[illegible] आते । वे यथा-

[illegible] मर्यादा-फल शब्द लिखना

[illegible] इसका यह हुआ है कि

[illegible] है। एक तो वह जो

[illegible] जाती है दूसरी वह जो

[illegible] सामयिक पुस्तकों में लिखी

[illegible] सम्पादक इस दोष को

[illegible] बोल चाल ही को

[illegible] की कुछ पुस्तकें भी

[illegible] गई है। जिन अखबारों

[illegible] होती है उनका प्रचार

[illegible] इस बात को जान

[illegible] कर भाषा-भेद बढ़ाना

[illegible] है। कोई कारण

[illegible] चाल की भाषा के शब्द

[illegible] तत्सम शब्द क्यों लिखे

[illegible] 'गृह' लिखा जाय?

[illegible] लिखा जाय? ऊँचा

[illegible] जाय? संस्कृत जानना

[illegible] पर उसके मेल से

[illegible] में बिहारियों की
[illegible] की गई। इसे
[illegible] यह पूर्वी प्र
[illegible] बंगला, उड़िया और
[illegible] और बिहारी की
[illegible] वह यहाँ
[illegible] वह पुराने मगध
[illegible] देश के वासी 'सं
[illegible] को भी ऐसा हो
[illegible] क्योंकि इनकी भाषा
[illegible] देश की भाषा
[illegible] इसने उनका
[illegible] नहीं करता
[illegible] में बिहारियों का
[illegible] है। बिहारियों
[illegible] बंगाल
[illegible] संयुक्त प्रान्त [illegible] उनका [illegible]
[illegible] से उच्चारणमन्य धी बंगा
लियों की 'श' [illegible] विशेषता बिहारियों की
[illegible] धीरे जाती रही है। यद्यपि बिहारी
[illegible] का 'श' नहीं उच्चारण करते, तथापि 'स' को

[illegible] पन्यास प्राय आनन्द से फ़ारसी, [illegible] [illegible] लिखें । उनके विषय में किसी को कुछ [illegible] [illegible] कहना साधारण साहित्य के विषय में [illegible] [illegible] देवनागरी लिपि में आसानी से लिखा जा सक[illegible] [illegible] नागरी लिपि के जानने वालों की संख्या फ़ारस[illegible] [illegible] जानने वालों की संख्या से कई गुना अधि[illegible] [illegible] दशा में सारे भारत में फ़ारसी लिपि क[illegible] [illegible] सर्वथा असम्भव और नागरी का सर्व[illegible] [illegible] यदि मुसल्मान सज्जन हिन्दुस्तान के [illegible] मानते हों, यदि स्वदेश प्रीति को भ[illegible] [illegible] समझते हों, यदि एक लिपि के प्रचा[illegible] [illegible] पहुंचना सम्भव जानते हों तो हठ [illegible] तर्क छोड़कर उन्हें देवनागरी लिपि सीखनी चाहिए ।

---

* इति *

INDIAN PRESS, ALLAHABAD